आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2749 • उदयपुर, मंगलवार 05 जुलाई, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

मानव सेवा में बाधक नहीं, सरहदें, तंजानिया में कृत्रिम अंग माप शिविर

कोई न कोई अपाहिज –'कोई न रहे लाचार' की उक्ति को चरितार्थ करते आपको अपने नारायण सेवा संस्थान ने सरहदों के पार तंजानिया (द. अफ्रीका) के दिव्यांगों को मदद पहुंचाने के लिए दो दिवसीय कृत्रिम अंग एवं कैलीपर माप शिविर 11 व 12 जून को 'द इन्डो तंजानिया कलचरल सेन्टर में आयोजित किया। इस शिविर के सौजन्य का पुण्य लाभ किया श्री लोहाना महाजन और लाल बंग परिवार के भरत भाई परमार ने जो संस्थान संरक्षक के रूप में वर्षों से संस्थान से जुड़े हैं। आपके प्रयासों से तंजनिया के दिव्यांगों को नारायण सेवा की प्रशिक्षित प्रोस्थेटिक एण्ड ऑर्थोटिस्ट टीम की सेवाएं सम्भव हुई।

आयोजक परिवार ने तंजानिया के दुर्घटनाग्रस्त गरीब दिव्यांगों को ज्यादा से ज्यादा मदद पहुंचाने के लिए आस–पास के क्षेत्रों में विभिन्न माध्यमों से भरपूर प्रचार –प्रसार करवाया। जिसके परिणाम स्वरूप पहले दिन 11 जून को 111 लोगों की ओपीडी हुई और उन सभी को कृत्रिम हाथ–पैर व कैलीपर के लिए चयनित करते हुए मेजरमेंट लिया गया। दूसरे दिन डॉ. मानस रंजन साहू की टीम ने 101 की ओपीडी करते हुए 35 दिव्यांगों का माप लिया। इस तरह 165 का कृत्रिम अंग व 13 का केलीपर बनाने के लिए माप लिया गया। इन सभी रोगियों के माप के अनुसार उदयपुर स्थित सेन्ट्रल फेब्रीकेशन यूनिट में अत्याधुनिक आर्टीफिशियल लिम्ब निर्मित किए जाएंगे।

आयोजक मण्डल की निर्धारित तिथि को पुनः फोलोअप केम्प लगाकर सभी रोगियों को कृत्रिम अंग पहनाए जायेंगे। केम्प की सफलता पर प्रसन्नता जाहिर करते हुए अध्यक्ष प्रशान्त जी अग्रवाल ने कहा कि नारायण कृपा से मदद की आशा में चाहे कितना भी दूर हो, उस तक पहुंचकर सहायता पहुंचाई जाएगी। शिविर में तरूण नागदा, सुशील कुमार और अनिल पालीवाल का विशेष सहयोग रहा।

हनुमानगढ़ (राजस्थान) में नारायण सेवा

नारायण सेवा संस्थान का ध्येय है कि दिव्यांग भी दौड़ेगा–अपनी लाठी छोड़ेगा। इस क्रम में संस्थान की शाखाओं व दानदाताओं के सहयोग से दिव्यांग जाँच, उनका ऑपरेशन के लिये चयन तथा कृत्रिम अंगों का माप लेना व अंग लगाने का कार्य गति पर है। ऐसा ही एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 21 जून 2022 को ग्राम पंचायत गोलूवाला प.स. पीलीबंगा, हनुमानगढ़ में हुआ।

शिविर सहयोगकर्ता ग्राम पंचायत गोलूवाला, सिहागाना रहे। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 40, ट्राईसाइकिल वितरण 20, व्हीलचेयर वितरण 20 की सेवा हुई।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमती कविता जी मेघवाल (जिला प्रमुख), अध्यक्षता श्री रणजीत जी बिजारणीया (उपखंड अधिकारी पीलीबंगा), विशिष्ट अतिथि श्री विनोद जी गोदारा (तहसीलदार, पीलीबंगा), श्रीमती पूनम जी गोदारा (जिला परिषद सदस्य), श्रीमती तीजा देवी जी (पंचायत समिति सदस्य) रहे। सहित शिविर टीम में हरिप्रसाद जी (शिविर प्रभारी), सत्यनारायण जी मीणा, देवीलाल जी मीणा, (सहायक), मानसिंह जी (सारथी) ने भी सेवायें दी।

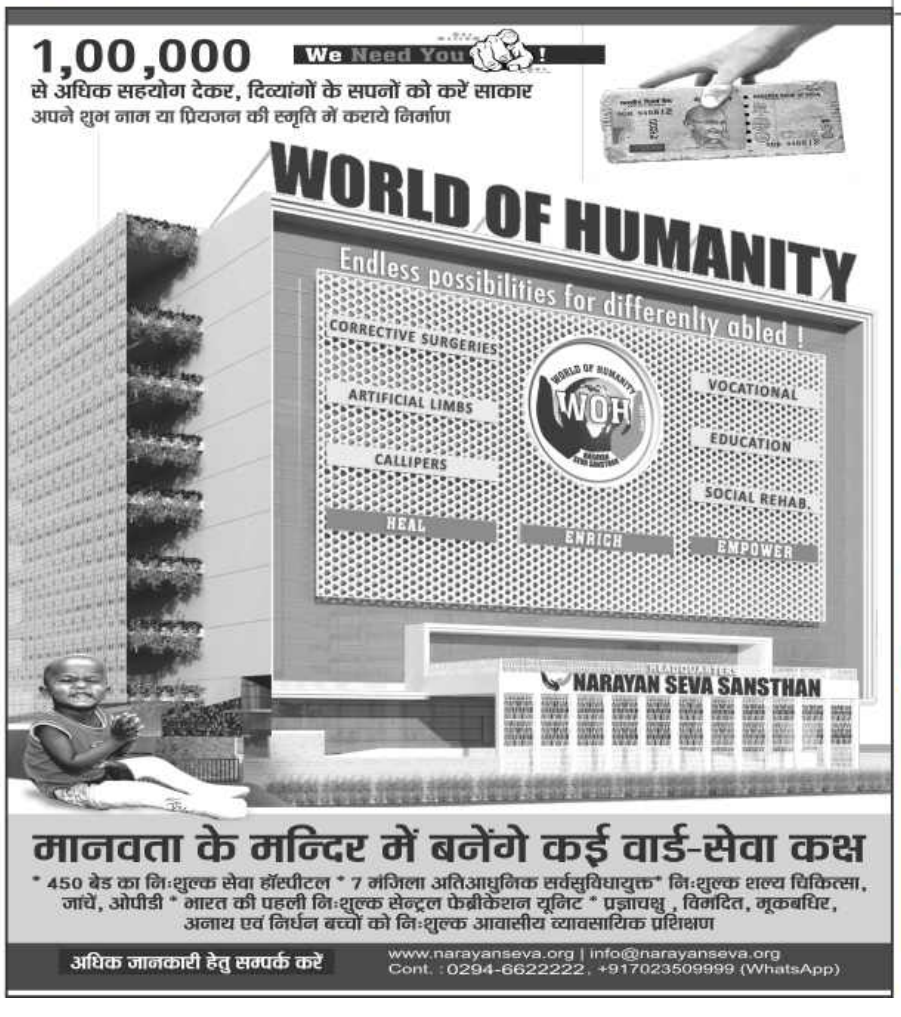

कृत्रिम पैर पाकर नफीसा खुश

कोलकता के मिलनशेख (33) के घर नफीसा का जन्म हुआ। परिवार में खुशी का माहौल था। लेकिन जब उसे करीब से देखा तो परिवार में मायूसी छा गई। पता चला कि जन्म से ही बायां हाथ और पैर अर्ध विकसित है। माता–पिता की चिन्ता दिन–ब–दिन बढ़ती गई। खेती करने वाले पिता का एक–एक दिन काटना मुश्किल होने लगा। दिव्यांग बेटी के इलाज के लिए जगह–जगह जाने लगे लेकिन धन के अभाव में हर जगह निराशा ही हाथ लगी। कुछ महिने पहले परिजन नफीसा को लेकर कोलकाता के पोलियो हॉस्पिटल में इलाज हेतु गए तो डॉक्टर ने कहा–यह कभी चल नहीं पाएगी। व्हीलचेयर पर ही इसका जीवन निर्भर रहेगा। माता–पिता हताश होकर घर लौट आए। एक दिन सोशल मीडिया के जरिए पता चला कि उदयपुर में नारायण सेवा संस्थान में दिव्यांगों का निःशुल्क में इलाज होता है तो उनके दिल में एक आस जगी।

संस्थान के सम्पर्क कर अपनी बेटी की व्यथा सुनाई। 3 जून 2022 को नफीसा को लेकर माता–पिता संस्थान आये तब संस्थान की चिकित्सकीय टीम ने जांच की और पैर का नाप लेकर निःशुल्क कृत्रिम पैर बनाकर बेटी को पहनाया और कुछ दिन उसे चलने की ट्रेनिंग दी गई। नफीसा सुल्ताना मुस्कुराते हुए आराम से जब चलने लगी तो माता–पिता के आंखों से खुशी के आंसू बह निकले।

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

रामचरित मानस की कथा ये जीवन की कथा है। आज सुबह में सोच रहा था जब राम जी को वनवास हुआ। सीता जी चाहती तो जनकपुरी भी जा सकती थी। अपने पीहर में भी जाकर के 14 साल रह सकती थी। राजा जनक जी तो चक्रवर्ती सम्राट थे। उन्होने कहाँ

सुख में आकर गिरुं, संकट में मुँह फेरुं।
देखगा तो कौन किसे, जाना होगा मौन जिसे।

जो गौरव लेकर के स्वामी,
जाते हो कानन गामी।
उसमें अर्द्ध भाग मेरा,
करो ना आज त्याग मेरा।

वनवास में कोई सुख के लिए नहीं जा रही थी। जहा खान–पान से मुँह धोना हेम बागों में रहना। जंगली पशुओं के साथ रहना परन्तु सीता जी ने माताजी ने क्या कहाँ मैं तो

नाथन न भय दो तुम हमको, जी चुकी है हम यम को।

उन्होंने सावित्री जी की बात भी बतायी थी। इसलिए बन्धुओं मैं आपके पास जब आता हूँ। तो मैं जीवन की बात लेकर के आता हूँ। अपने को जीवन सीता माता जैसा जीना चाहिए। अपने सासू को माता समझना चाहिए। जैसे सुनयनैना उनकी माता थी जानकी जैसी, पृथ्वी उनकी माता थी जानकी जी पृथ्वी पुत्रा थी। पृथ्वी से निकली थी आपने सुना ही था। जब एक बार जनकपुर में अकाल पड़ा और पुरोहितों ने कहाँ कि राजा जनक अपने हाथ में खेत में हल से खोदेगे। तो वृष्टि होगी। यज्ञ हुआ बहुत बड़ा और जनक जी जब जुताई कर रहे थे हल से खोद रहे थे। अचानक हल की नोक एक स्वर्ण के मटके पर लगी। आधा मटका बाहर की तरफ नजर आया। उसमे एक बालिका थी। वो बालिका सीता माता थी। पृथ्वी पुत्रा और आपने तो देखा होगा उत्तरकाण्ड के बाद में कहीं–कहीं लव–कुश काण्ड भी आता है। रामचरित मानस में तो नहीं है अन्य ग्रंथो में भी आता है लवकुश काण्ड़ उस समय माता पृथ्वी की गोद में समा जाती है। लवकुश की माता सीता माताजी।

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

वर्तमान में जीएँ

जिन्दगी कोई ड्रेस रिहर्सल नहीं है। हम किसी भी दर्शन में विश्वास करते हों, पर हमें जिंदगी का खेल खेलने का मौका केवल एक ही बार मिलता है।

दाँव पर इतनी कीमती चीजें लगी होती हैं कि आप जिंदगी यूँ ही बरबाद नहीं कर सकते। दाँव पर आने वाली पीढ़ियों का भविष्य लगा होता है।

हम कहाँ हैं और किस दौर में हैं? जवाब है कि इसी दौर में हैं, और यहीं हैं। इसलिए हम आज को बेहतर बनाएँ और इसका भरपूर आनंद लें।

इसका यह मतलब नहीं है कि हमें भविष्य के लिए कोई योजना नहीं बनानी चाहिए, पैगाम यह है कि हमें आगे की योजना बनाने की ही जरूरत है और अगर हम अपने 'आज' का भरपूर इस्तेमाल खुशहाली के लिए कर रहे हैं, तो हम खुद–ब–खुद आने वाले बेहतर कल के लिए बीज बो रहे हैं।

क्या हम मानते हैं ? अगर हम अपने नजरिए को सकारात्मक बनाना चाहते हैं, तो टालमटोल की आदत छोड़ें, और तुरंत काम करने पर अमल करना सीखें।

सम्पादकीय

'समय परिवर्तनशील है' यह कथन सदैव सत्य सिद्ध होता रहा है। अनुभव में भी यही आता है कि समय न केवल परिवर्तनशील है वरन् तेजी से बदलता है। किन्तु जो शाश्वत् है वो कभी नहीं बदलता, वह तो अटल है, स्थिर है, चिरंतन है, तो बदलता क्या है? बदलते हैं रीति–रिवाज पर अटल है उनके पीछे की भावना, बदलते हैं रिश्ते–जान–पहचान पर स्थिर है उनके पीछे की आत्मीयता, बदलता है रहन–सहन पर चिरंतन है उसके पीछे का जुड़ाव। यह भावना, आत्मीयता व जुड़ाव ही मानव–संस्कृति के बीज हैं। जब तक बीज सुरक्षित हैं तब तक कितना भी बिगाड़ क्यों न हो जाए सद् की आशा कभी निराशा में नहीं बदलेगी। जब तक ये मानवीय गुण उपस्थित हैं तब तक असभ्यता व कुसंस्कार कितना भी जोर लगा ले, समाज और मनुष्य का सामंजस्य नहीं टूट सकता। इसलिए हमें परिणामों को बदलने या उन पर चिंता करने की बजाय, बीजों को सुरक्षित रखने व अनुकूलता होने पर उन्हें बोने की जुगत में रहना चाहिए। तभी तो वह फसल लहलहायेगी जिसकी सभी को आस है।

कुछ काव्यमय

शुचिता खोती जा रही,
क्यों जन–जन से आज।
आओ फिर मिलकर करें,
शुचिता का आगाज।।
मन में हो संवेदना,
तन सेवा में लीन।
खुशियों भरा जहान हो,
क्यों कोई गमगीन।।
सेवा के आकाश में,
ऊँची भरो उड़ान।
इस प्रयास से सहज में,
मिल जायें भगवान।।
करुणा का झरना बहे,
बुझे सभी की प्यास।
खुशियों का माहौल हो,
मिटे सभी त्रास।।
सरल चित्त मानव बने,
तो हो सरल समाज।
उस समाज की नींव पर,
हो ईश्वर का राज।।

अपनों से अपनी बात

सेवा ही बनाती है सौभाग्य

प्यासा मनुष्य अथाह समुद्र की ओर यह सोचकर दौड़ा कि जी भर के अपनी प्यास बुझाऊँगा! वह किनारे पर पहुँचा और अंजलि भरकर जल मुंह में डाला, किन्तु तत्काल ही उगल दिया। प्यासा सोचने लगा कि नदी, समुद्र से छोटी है, किन्तु उसका पानी मीठा है। समुद्र नदी से कई गुना विशाल है पर उसका पानी खारा है। कुछ ही क्षणों बाद समुद्र पार से उसे एक आवाज सुनाई दी– 'नदी जो पाती है, उसका अधिकांश बाँटती है, किन्तु समुद्र सब अपने में ही संचित रखता है। दूसरों के काम न आने वाले स्वार्थी का सार जीवन यों ही निस्सार होकर निष्फल चला जाता है।'

बंधुओं! जिस प्रकार प्रकाश सूर्य का और सुगंध पुष्प का स्वभाव है, उसी प्रकार दूसरों के दुःख दर्द में सहायक बनना सहृदयी मानव का स्वभाव है। सेवा का भाव उसी में प्रस्फुरित होता है, जो मात्र अपनी प्रसन्नता के लिए वस्तुएँ, अवस्था एवं परिस्थितियों की खोज में ही लगा नहीं रहता।

निःस्वार्थ सेवा करने की ललक ही सचमुच ईश्वर की सच्ची सेवा और पूजा है। सेवा के लिए प्रयास नहीं करना पड़ता, इसके लिए अवसर स्वतः प्राप्त हो जाते है , क्योंकि सेवक की वृत्ति उस निर्मल सरिता के समान है, जो निरन्तर सेव्य की ओर बहती रहती है। सेवक के अंतरंग में ही प्रभु रमण करते है।

नारायण सेवा संस्थान इसी दर्शन का अनुगामी है। हमारा मानना है कि सेवा से सौभाग्य प्राप्त होता है। यदि सेवा को कर्त्तव्य समझा जाय, तो निःशक्त, निराश्रित, निर्धन और जीवन से निराश लोगों के दुःख दर्द काफी हद तक कम किए जा सकते हैं। यह भ्रम है कि धन–धान्य से परिपूर्ण व्यक्ति अर्थात समृद्ध जीवन जीने वालों को ही सुःख शान्ति नसीब होती है। वे धन कमाना तो जानते हैं लेकिन पुण्यार्जन की ओर नहीं बढ़ पाते। सुःख शांति मय जीवन कैसे जिया जाए? उन्हें ज्ञात नहीं।

धन सांसारिक जीवन में एक सीमा तक महत्त्वपूर्ण हो सकता है, किन्तु धर्म और सेवा का मार्ग उससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण व श्रेष्ठ है क्योंकि धर्म स्थायी रूप से मानव के साथ रहता है, जब कि धन अस्थायी है। यदि भगवान ने किसी को समृद्धता से नवाजा है, तो वे पीड़ित, वंचित और जरूरतमंद की बुनियादी जरूरत को पूरा करने में सहयोग का संकल्प लेलें, भौतिक उन्नति की बजाय आत्मोन्नति के लिए चिंतन शील हो जाएं तो दुःख उनके द्वार पर कभी दस्तक दे ही नहीं सकता। आध्यात्मिक ज्ञान जीवन की प्रत्येक समस्या का सम्पूर्ण निदान है। कोई भी अतिथि हमारे घर से भूखा, प्यासा न जाए और पड़ोसी भूखा न सोये, दवा और इलाज के अभाव में कोई न तड़फे ऐसा प्रयास ही मानव जीवन को सार्थक करेगा। यही शान्ति का मूलमंत्र भी है।

–कैलाश 'मानव'

मोक्ष का मार्ग

जीवन में अनेक बार ऐसी परिस्थितियाँ पैदा हो जाती हैं, जो व्यक्ति के समक्ष उलझनें पैदा कर देती हैं। जहाँ एक ही समस्या के लिए दो हल और दोनों ही एक–दूसरे के विरुद्ध होते हैं, सही साबित होते हैं। लेकिन दोनों ही हलों की उपयुक्तता व्यक्ति, समय, स्थान और परिस्थिति पर निर्भर करती है।

एक जिज्ञासु व्यक्ति एक संत के पास गया और पूछा–हे महात्मन् ! क्या गृहस्थ जीवन में रहकर भी मोक्ष प्राप्ति की जा सकती है?

संत ने उत्तर दिया – हाँ, निश्चित रूप से गृहस्थ जीवन में रहकर भी मोक्ष पाया जा सकता है। महाराज जनक के पास बहुत वैभव था, लेकिन फिर भी उन्होंने मोक्ष पाया। वह व्यक्ति संत द्वारा दिए गए उत्तर से संतुष्ट होकर वहाँ से चला गया। उसके जाने के पश्चात् वहाँ एक दूसरा जिज्ञासु व्यक्ति आया और उसने संत से पूछा –क्या गृहस्थ जीवन त्याग और वन में जाकर तपस्या करके मोक्ष पाया जा सकता

है? संत ने उत्तर दिया –हाँ, गृहस्थ जीवन को त्यागने के पश्चात् वन में जाकर तपस्या करके मोक्ष पाया जा सकता है।

जिज्ञासु ने पूछा –कैसे? तब संत ने बताया कि दुनिया में भक्त ध्रुव तथा महात्मा बुद्ध जैसे बहुत से ऐसे सिद्ध पुरुष हुए हैं, जो यदि वन में नहीं जाते तो उन्हें मोक्ष प्राप्त नहीं होता। एक शिष्य जो संत की बातों को सुन रहा था, उसे दूसरे जिज्ञासु के जाने के पश्चात् बहुत आश्चर्य हुआ और उसने कौतुहलवश संत से पूछा–गुरुदेव, आपने एक ही प्रश्न के भिन्न–भिन्न उत्तर और वो भी एक–दूसरे के विरोधाभासी, कैसे दिये? संत ने समझाया–पहला जो व्यक्ति आया था, वह गृहस्थ जीवन में रहकर भी मोक्ष पाने की साधना कर सकता था, इसीलिए मैंने उसे बताया कि राजा जनक ने जैसे वैभव में रहकर भी मोक्ष प्राप्त किया, ठीक वैसे ही गृहस्थ जीवन में रहकर मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है, क्योंकि उस जिज्ञासु में गृहस्थ रहकर भी मोक्ष पाने की साधना करने की क्षमता थी, लेकिन दूसरा जिज्ञासु जो आया वह गृहस्थ जीवन बसाकर मोक्ष प्राप्ति की साधना नहीं कर सकता था, इसीलिए मैंने उसे महात्मा बुद्ध वाला उदाहरण दिया। इस प्रकार एक ही प्रश्न के दो विरोधाभासी उत्तर हो सकते हैं, लेकिन यह निर्भर करता है देश–काल– परिस्थिति और व्यक्ति पर। कभी–कभी एक बड़ा झूठ सौ सच से बड़ा हो जाता है तो कभी–कभी एक बड़ा सच सौ झूठ से भी बड़ा हो जाता है। कई बार प्रेम करना गुनाह हो जाता है तो कई बार क्रोध करना भी आवश्यक हो जाता है। कई बार धर्म करना अधर्म हो जाता है और कई बार अधर्म करना भी धर्म हो जाता है। ये समस्त बातें व्यक्ति विशेष और देश– काल– परिस्थिति पर निर्भर करती हैं।

–सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित-झीनी-झीनी रोशनी से)

सहयात्री ने बताया कि वह अपना सब कुछ गंवा कर एक नितान्त अनजाने प्रदेश में जा रहा है, उसे यह भी नहीं पता कि उसके साथ क्या होगा, वहां वह क्या करेगा ? कैलाश को उसकी बात समझ में नहीं आई तो उसने कहा कि खुल कर बताइये, आपकी इस बात से कुछ समझ में नहीं आ रहा। तब उस व्यक्ति ने बताया कि भारत में वह अपने एक मित्र के साथ व्यापार करता था, भागीदारी थी। मित्र ने व्यापार में घाटा दिखा कर उसे सड़क पर ला दिया। यहां उसके लिए जब कुछ शेष नहीं रहा तो वह अपना भाग्य आजमाने जा रहा है। कहते हैं अमेरिका अवसरों की भूमि है, उसे भी यदि कोई अवसर मिल गया तो वह भी अपना भाग्य चमकाना चाहेगा। कैलाश को उसकी हिम्मत पर आश्चर्य हो रहा था। उसने पूछ लिया कि अमेरिका में कोई जान–पहचान का व्यक्ति है तो उसने कन्धे उचका दिये – कोई नहीं। कैलाश को यकीन नहीं हो रहा था कि बिना किसी जान पहचान के यह व्यक्ति अपना शेष सारा जीवन एक अनजान देश में कैसे व्यतीत कर पायेगा ? उसने वापस पूछा–कोई तो होगा। सहयात्री ने फिर सिर हिलाकर इन्कार किया और बोला कि वहां कुछ ज्वेलर्स हैं उनके पते जरूर उसके पास हैं। इन्हीं में से एक ज्वेलर परिचित है, वह शायद कोई मदद कर सके। ज्वेलर्स का नाम सुन कर कैलाश की आंखों में भी चमक आ गई, उसे भी कुछ ऐसे लोगों के पते चाहिये थे जो उसे धन दे सकें। कैलाश ने उससे पूछ लिया कि किन किन ज्वेलर्स के पते आपके पास है। इस पर उस यात्री ने एक पुस्तक अपने बेग से निकाल कर उसे थमाई और कहा कि इसमें सभी ज्वैलर्स के पते हैं। पुस्तक में 200–300 पत्ते थे। कैलाश की इच्छा हो गई कि काश यह पुस्तक उसे मिल जाती तो उसे काफी मदद मिल जाती। यह संभव नहीं था तो उसने यात्री की अनुमति ले उस पुस्तक से जितने पते नोट कर सकता था कर लिये।

न्यूयार्क पहुँचते ही सहयात्री बिछुड़ गया। मनु भाई उन्हें लेने आ गये थे, उनके साथ कनेक्टिकट में उनकी साली के यहां पहुँच गये। मनु भाई की न्यूयार्क में कोई पहचान नहीं थी, डॉ. अग्रवाल के बनेड़ा के एक परिचित जरूर थे। उन्हें फोन किया तो उन्होंने इन्हें खाने पर बुला लिया। डॉ. साहब के परिचित काफी सम्पन्न प्रतीत हो रहे थे, चांदी की थालियों व सोने के चम्मचों के साथ उन्होंने भोजन कराया। कैलाश की तो बांछे खिल गई, जरूर इस स्थान से अच्छा चन्दा मिल जायेगा।

अंश - 146

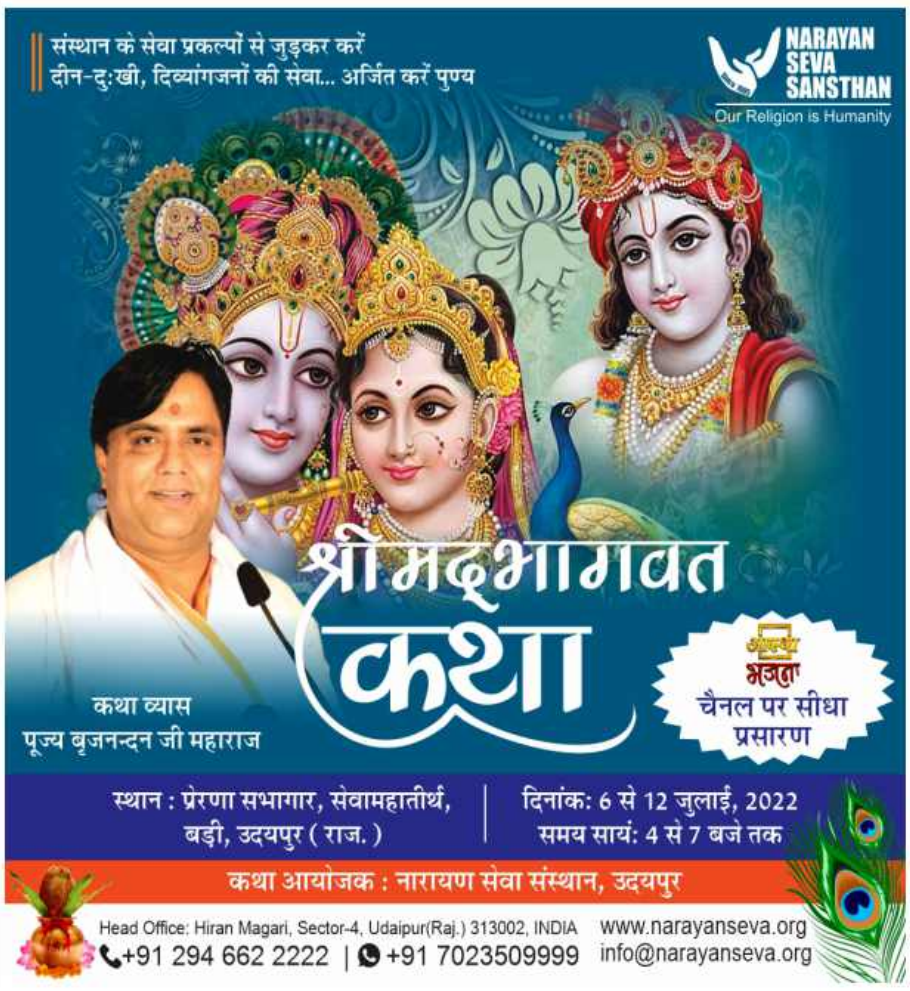

करेला है औषधीय गुणों से भरा

कड़वे स्वाद वाला करेला ऐसी सब्जी है, जिसे अक्सर नापसंद किया जाता है। लेकिन, अपने पौष्टिक और औषधीय गुणों के कारण यह दवा के रूप में भी काफी लोकप्रिय है।

त्वचा रोग में लाभकारी – इसमें मौजूद बिटर्स और एल्केलाइड तत्व रक्त शोधक का काम करते हैं। करेले की सब्जी खाने और मिक्सी में पीस कर बना लेप रात में सोते समय लगाने से फोड़े–फुंसी और त्वचा रोग नहीं होते। दाद, खाज, खुजली, सियोरोसिस जैसे त्वचा रोगों में करेले के रस में नीबू का रस मिलाकर पीना फायदेमंद है।

रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाए – करेले में मौजूद खनिज और विटामिन शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाते हैं जिससे कैंसर जैसी बीमारी का मुकाबला भी किया जा सकता है।

जोड़ों के दर्द से राहत दे – गठिया या जोड़ों के दर्द में करेले की सब्जी खाने और दर्द वाली जगह पर करेले के पत्तों के रस से मालिश करने से आराम मिलता है।

उल्टी–दस्त में फायदेमंद – करेले के तीन बीज और तीन काली मिर्च को घिसकर पानी मिलाकर पिलाने से उल्टी–दस्त बंद हो जाते हैं। अम्लपित्त के रोगी जिन्हें भोजन से पहले उल्टियां होने की शिकायत रहती है, करेले के पत्तों को सेककर सेंधा नमक मिलाकर खाने से फायदा होता है।

मोटापा से राहत दिलाए – करेले का रस और एक नीबू का रस मिलाकर सुबह सेवन करने से शरीर में उत्पन्न टॉकसिंस और अनावश्यक वसा कम होती है और मोटापा दूर होता है।

पथरी रोगियों के लिए अमृत – पथरी रोगियों को दो करेले का रस पीने और करेले की सब्जी खाने से आराम मिलता है। इससे पथरी गलकर बाहर निकल जाती है। 20 ग्राम करेले के रस में शहद मिलाकर पीने से पथरी गल कर पेशाब के रास्ते निकल जाती है। इसके पत्तों के 50 मिलीलीटर रस में थोड़ी–सी हींग मिलाकर पीने से पेशाब खुलकर आता है।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

आपश्री का सहयोग मिले : प्रार्थना

भारत के विभिन्न शहरों में 720 स्नेह मिलन
2026 के अंत तक 720 मिलन समारोह आयोजित करने का संकल्प

960 शिविरों द्वारा निःशुल्क जांच एवं उपचार
2026 के अंत तक 960 आर्टिफिशियल लिम्ब केम्प लगाये जायेंगे।

1200 नई शाखाएं
2026 के अंत तक 1200 नई शाखाएं खोलने का लक्ष्य।

120 कथाएं
2026 के अंत तक विभिन्न शहरों में 120 कथाएं आयोजित की जायेंगी।

वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी
2026 के अंत तक वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी का निर्माण पूर्ण होकर 10 हजार से अधिक लोग लाभान्वित होंगे।

नारायण सेवा केन्द्र
आगामी 5 वर्षों में संस्थान के वर्तमान में संचालित सभी केन्द्रों में रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण आरम्भ किये जायेंगे।

विदेश में सेवा प्रकल्पों का विस्तार

26 देशों में पंजीयन
वर्ष 2026 के अंत तक 26 देशों में संस्थान के पंजीकृत कार्यालय खोलने का लक्ष्य

6 से सेवा केन्द्र का शुभारम्भ
6 से अधिक देशों में केन्द्र स्थापित कर संस्थान सेवाओं को देगा विस्तार

20 हजार दिव्यांगों को लाभ
विदेश के 20 हजार से अधिक जरूरतमंद एवं रोगियों को लाभान्वित करने का होगा प्रयास

अनुभव अमृतम्

नारायण सेवा में प्रेक्टिकल रूप से सेवा करने पधारे। ये बच्चे के पैर टेढ़ा है। बिना ऑपरेशन के सीधा हो नहीं सकता। लाख कोशिश कर लो। कितनी भी फिजियोथेरेपी करा लें, कितनी भी मालिश करा लें, ये टेढ़ा पैर सीधा नहीं होता। हड्डी ही टेढ़ी है, इसकी सर्जरी ही करनी पड़ेगी। और सम्पूर्ण भारत में भी दिव्यांगों के लिये, जन्मजात दिव्यांगों के लिये बर्थ डिसएबेलीटी के लिये सर्जरी भारत में कही भी नहीं हो रही है। आपकी अपनी नारायण सेवा कर रही है। हम सब निमित्त है, डॉक्टर भी निमित्त है। पीर हरो प्रभु, पीर हरो प्रभु। हरि शरमण् हरि शरणम्। ज्यों की त्यों धर दीनी चदरिया। बाँसवाड़ा से पोने दो साल का जो वहाँ भी योग था। रेखाओं में लिखा था, प्रत्येक रेखा में लिखा था। इतनी तारीख इतने दिन बाँसवाड़ा में रहेगा। प्रथम शाखा बनेगी, और बाँसवाड़ा के प्रवास में ही परतापुर में 6 दिसम्बर को 1990 को परतापुर में शिविर कर रहे थे। शिविर हो रहा था, बड़ा शिविर हुआ, और इतिहास में एक घटना और घटी थी। श्रीराम मन्दिर के स्थान पर जो कुछ भी बनाया गया था, वह उसी दिन टूटा था। 1990 या 1992 ध्यान नहीं है– साल, परन्तु 6 दिसम्बर तारीख वही थी।

साल कुछ अन्य होगा, मैं इतिहास में जाता नहीं, पर ज्यादा जानकारियाँ नहीं। अपटेड इसलिये रहता हूँ कि जनरल नॉलेज ठीक रहना चाहिये। पर अपने बारें में कितना अपटेड है–हम? ये विचारों की श्रृंखला, विचारों का कोलाहल। जब पन्द्रह–सोलह साल का था उसके पहले जब सॉतवीं में पढ़ता था– गंगापुर। तब में बार – बार हरि दर्शन को पूछता था। पूज्य भाईसाहब, ये व्यर्थ

विचार क्यों चलते है? व्यर्थ विचार, जिन विचारों का कोई मायना नहीं। कोई लेना –देना नहीं। अब मैं अपने मन को देखता हूँ– भगवान की परम .पा से। ध्यान योग की .पा से मन में व्यर्थ विचार बहुत कम आते हैं। वर्तमान में ज्यादा रहने का अभ्यास बढ़ रहा है। ये भी भगवान की .पा है। ये कैसी लीला रचा रहे हो? मुझमें रहकर मुझसे मुझी को दिखा रहे हो? मेरी ही खोज करा रहे हो ? मन अन्दर जा रहा हैं। आ रहा हैं। तो परतापुर का शिविर हुआ। और पोने दो साल में उधर भी बहुत काम हुए। इधर उदयपुर में प्रत्येक रविवार को लगभग शिविर होते ही रहे। मफत काका द्वारा ये सोयाबीन की ट्रकें आती रही। इसमें आधा ट्रक शक्कर है।

आधा ट्रक सोयाबीन ऑयल है। कुछ दूध के पाऊडर के कट्टे भी है। ये कपड़े किन्होंने भेजे? मफत काका कैसे मिले ? और बहुत सालों पहले मफतकाका अन्तिरक्ष में विलिन हो गये। मैं चाहता था, वो रहे, लेकिन चाहना पूरी नहीं हो पाई। किसकी चाहना पूरी हो पाई? किसी की नहीं। चक्रवर्ती सम्राट की भी हर चाहना पूरी नहीं हो पाई। परन्तु जो राजमलजी जैन साहब अथाह, श्रद्धा, अथाह विश्वास।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 499 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. +91-294-6622222,+91-7023509999 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com•आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023